آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسۡمِ اللّٰہِ الۡمَلِكِ السَّلٰمِ

صـ م ح م د ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ ح م د م ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ م د م ح ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ د م ح م ـلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

सलातुल मीमिल्अरबईन
दुरूदे चहल मीम
8

पेशकश

बमौक़ा शव्वाल 1437हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضي الله عنهم

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

सुब्ह़ान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्ता़न क या मन हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल अ ह़दुस़्स़ म दु लम यलिद व लमयूलद स़ल्लि सर्मदवँ व सल्लिम सलामवँ व बारिक ब र क तन दाइमतन अ़ला नूरिकल ह़बीबिल अ ह़ दिस़्स़ म दिल्लज़ी नव्वर्त बिनूरिही जबी न आ द म फ़ कानल मलाइकतु यजूरूनहू मुस़ल्लियी न व मुसल्लिमी न अ़ र द़स्सय्यिदु आ द मु बिजनाबि क अल्लाहुम्म शर्रिफ़नी बिज़ियारति नूरिकल मह़ब्बति मा वद़अ़ तहू फ़ी इब्ह़ामिही मिनल यदिल युम्ना र अस्सय्यिदु आ द मु नूरकल मह़ब्ब त व ज द व तमा त़ ल बिही व क़ब्ब ल इब्ह़ामहू बिल्अ़क़ीदति वल मह़ब्बति व स़ल्ला व सल्ल म क़ा इलल्ला इलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि व जअ़ल्तहू अव्वलल ब श रि लिविलादति अफ़्द़लिल ब शरि व कुल्त फ़िल क़ुर्आनि व इज़ क़ा ल रब्बु क लिल्मलाइकति इन्नी जाइलुन फ़िल अरद़ि ख़लीफ़तवँ व नूरिकल्लज़ी जअ़ल्त वालिदैहि अक्रमल वालिदी न व आलहू अक्रमल आलि व अस़्ह़ाबहू अक्रमल अस़्ह़ाबि व उम्म तहू अक्रमल उममि व हु व नूरुकल ह़बीबुल वाह़िदुल अ ह़दुस़्स़ म दु मोह़म्मदुर्रसू लुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस़्ह़ाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सिवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उस के जो यकता है बेनियाज़ है वह किसी से पैदा नहीं उस की कोई औलाद नहीं तू भेज ख़ूब ख़ूब सरमदी दुरूदो सलाम और दाइमी बरकत अपने उस यकता बेनियाज़ नूरे ह़बीब पर जिनके नूर से तूने सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम की पेशानी को रौशन फ़रमाया फ़रिश्ते उस नूर की दुरूदो सलाम पढ़ते हुए ज़ियारत फ़रमाते थे सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम ने तेरी बारगाह में अ़र्ज़ किया ऐ मेरे अल्लाह मुझे भी अपने उस नूरे मोह़ब्बत की ज़ियारत से शर्फ़याब फ़रमा जिसे तूने मेरी पेशानी में रखा है पस तूने उनकी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उस नूर को उनके दाहने हाथ के अँगूठे में रख दिया चुनान्चे जब सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम ने तेरे नूरे मोह़ब्बत को देखा तो वज्द में आकर मचल उठे और बड़े ही अ़क़ीदतो मोह़ब्बत से अपने अँगूठे को बोसा दिया और ला इलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहिﷺ कहते हुए दुरूदो सलाम पेश किया फिर तूने उन्हें अफ़ज़लुल्बशर की विलादत के लिए अव्वलुल बशर क़रार दिया जैसा कि तूने क़ुर्आन में फ़रमाया “ और याद करो जब तुमहारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में अपना नाएब बना रहा हूँ” और अपने उस नूर पर कि बनाया तूने जिन के वालिदैन को तमाम वालिदैन में सबसे ज़्यादा करामत वाला और उन की आल को तमाम आल में सबसे ज़्यादा करामत वाला उन के अस़्ह़ाब को तमाम अस़्ह़ाब में सबसे ज़्यादा करामत वाला और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में सबसे ज़्यादा करामत वाला और वह तेरे तन्हा यक्ता बेनियाज़ नूरे ह़बीब मोह़म्मदﷺअल्लाह के रसूल हैं। और आपﷺके वालिदैन पर, आपﷺकी आल पर आपﷺकी अहले बैत पर और आपﷺके अस़्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी तौ़र पर।

नोट: जो शख़्स़ इस दुरूद को रोज़ाना ४०/७/३ बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा वह अरकाने इसलाम के अनवार और नूरे ईमान से माला माल होगा और उस की हर दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।